विचार जलवायु परिवर्तन से निपटने में इच्छाशक्ति की कमी पर जताई चिंता

विश्व समुदाय गंभीर नहीं :सिंह

'जलवायु परिवर्तन को लेकर चल रही बातचीत में भारत निभाएगा सकारात्मक भूमिका'

भाषा, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने जलवायु परिवर्तन से निपटने में वैश्विक समुदाय की इच्छाशक्ति की कमी की ओर इशारा करते हुए कहा कि भारत इस समस्या से निपटने के लिए चल रहे प्रयासों में सकारात्मक भूमिका निभाएगा। लेकिन यह सहयोग विकास के आधार और जिम्मेदारियों के समान वितरण की बुनियाद पर टिका होना चाहिए। 12वीं दिल्ली सतत विकास शिखर वार्ता में अपने संबोधन में उन्होंने कहा, यह समझना जरूरी होगा कि फिलहाल इस समस्या से गंभीरता से निपटने में सामूहिक वैश्विक इच्छाशक्ति की कमी दिखाई देती है। जलवायु परिवर्तन के प्रबंधन में सहयोगात्मक सामूहिक कार्रवाई के लिए वैश्विक बातचीत के लिहाज से नए सिरे से गति प्रदान करने की जरूरत है'।

सिंह ने कहा, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि भारत जलवायु परिवर्तन को लेकर चल रही बातचीत में सकारात्मक भूमिका निभाएगा।

उन्होंने सतत विकास के संदर्भ में कहा कि कोई भी देश अलग अलग इस दिशा में उपलब्धि हासिल नहीं कर सकता। ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के कारण जलवायु परिवर्तन का खतरा गंभीर स्तर पर है और इस दिशा में विकसित और विकासशील सभी देशों के सहयोग की जरूरत है। प्रधानमंत्री के अनुसार, इस तथ्य को ध्यान में रखने की जरूरत है कि विकसित देशों में प्रति व्यक्ति उत्सर्जन भारत जैसे विकासशील देशों की तुलना में 10 से 12 गुना ज्यादा है। सिंह ने जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र की कार्ययोजना के सिद्धांतों पर कहा, 'यह सहयोग विकास के आधार और जिम्मेदारियों के समान वितरण की बुनियाद पर टिका होना चाहिए। उनके मुताबिक, हमें इस समस्या को सुलझाने का एक ऐसा रास्ता तलाशना चाहिए, जो विकासशील देशों को उनके विकास के हक से दूर नहीं करे।

उन्होंने कहा कि भारत जलवायु परिवर्तन से होने वाले नुकसान में कमी लाने की अपनी राष्ट्रीय रणनीति के साथ आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा, 1992 में हुए ऐतिहासिक रियो पृथ्वी शिखर सम्मेलन (रियो अर्थ समिट) को इस साल 20 वर्ष पूरे हो रहे हैं, जिसने टिकाऊ विकास और उसके महत्व की अवधारणा तय की। रियो में 20 साल पहले हुई घोषणा में कहा गया था कि मौजूदा और भविष्य की पीढ़ियों की जरूरत को देखते हुए विकास का अधिकार समानता से मिलना चाहिए। पिछले साल दिसंबर में डरबन में हुई जलवायु शिखरवार्ता का जिक्र करते हुए सिंह ने कहा कि क्योतो प्रोटोकॉल की अवधि बढ़ाने पर हुई सहमति महत्वपूर्ण उपलब्धि है। बाली कार्य योजना का संदर्भ लेते हुए सिंह ने कहा कि बाली में जिन मुद्दों पर सहयोगात्मक कार्रवाई की सहमति बनी थी उन पर प्रगति की जरूरत है।

प्रधानमंत्री ने इस मौके पर वर्ष 2012 के लिए सतत विकास नेतृत्व पुरस्कार फिनलैंड की राष्ट्रपति तरजा हैलोनिन को प्रदान किया। पर्यावरण के क्षेत्र में भारत के प्रयासों का उल्लेख करते हुए सिंह ने कहा कि भारत दुनिया के बड़े जैव-विविध देशों में से एक है। हमारा देश उन शुरुआती कुछ राष्ट्रों में शामिल है, जिन्होंने व्यापक जैव विविधता कानून बनाया है।

नई दिल्ली में आयोजित 12वीं सतत विकास शिखरवार्ता में फिनलैंड की राष्ट्रपति तार्जा हेलोनेन को सतत विकास लीडरशिप का अवार्ड देते प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह।